परिवार का भाषा अधिग्रहण पर प्रभावः एक समालोचनात्मक अध्ययन

डॉ. अम्रिता मार्शल
सहायक अध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, सरदार पटेल विश्वविध्यालय

सारांशः

भाषा अधिग्रहण (Language Acquisition) बालक के समग्र विकास की आधारभूत प्रक्रिया है। जन्म के पश्चात् बालक सर्वप्रथम परिवार के संपर्क में आता है और यहीं से उसके भाषाई विकास की शुरुआत होती है। परिवार न केवल प्रथम सामाजिक संस्था है, बल्कि भाषा सीखने का सबसे प्रभावशाली माध्यम भी है। माता-पिता, दादा-दादी, भाई-बहन तथा अन्य पारिवारिक सदस्य बालक के लिए भाषाई आदर्श (Linguistic Models) का कार्य करते हैं। परिवार में होने वाले दैनिक संवाद, कहानी-कथन, लोकगीत, सांस्कृतिक गतिविधियाँ तथा भावनात्मक अंतःक्रियाएँ भाषा अधिग्रहण को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं (Bruner, 1983; Vygotsky, 1978)। आधुनिक अनुसंधानों से स्पष्ट हुआ है कि जिन परिवारों में बच्चों के साथ नियमित वार्तालाप, पुस्तक-पठन, प्रश्नोत्तर तथा संप्रेषणात्मक गतिविधियाँ होती हैं, वहाँ बच्चों की शब्दावली, व्याकरणिक दक्षता, संप्रेषण कौशल तथा साक्षरता का विकास अधिक प्रभावी होता है (Bornstein et al., 2020)। इसके विपरीत संवादहीन, तनावपूर्ण अथवा अत्यधिक डिजिटल-निर्भर पारिवारिक वातावरण भाषा विकास को बाधित कर सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भी प्रारम्भिक शिक्षा में मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा को सीखने के सर्वोत्तम माध्यम के रूप में स्वीकार किया है (Government of India, 2020)। इस शोध-पत्र का उद्देश्य परिवार के विभिन्न आयामों—जैसे माता-पिता की शिक्षा, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, पारिवारिक संवाद, सांस्कृतिक वातावरण तथा बहुभाषिकता—के भाषा अधिग्रहण पर प्रभाव का समालोचनात्मक विश्लेषण करना है।

मुख्य शब्दः भाषा अधिग्रहण, परिवार, मातृभाषा, भाषायी वातावरण, सामाजिक अंतःक्रिया, बाल विकास

भूमिकाः

भाषा मानव जीवन का सबसे प्रभावी संप्रेषण माध्यम है। विचारों, भावनाओं, अनुभवों और सांस्कृतिक परंपराओं का आदान-प्रदान भाषा के माध्यम से ही संभव होता है। बालक जन्म के समय किसी भी भाषा का ज्ञान लेकर नहीं आता, किंतु वह भाषा सीखने की जैविक क्षमता अवश्य लेकर जन्म लेता है। इस क्षमता का विकास उसके सामाजिक एवं पारिवारिक परिवेश में होता है। इसलिए भाषा अधिग्रहण केवल जैविक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रक्रिया भी है (Chomsky, 1965; Vygotsky, 1978)।

बालक अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में परिवार के सदस्यों के साथ सर्वाधिक समय व्यतीत करता है। माता-पिता, भाई-बहन तथा अन्य सदस्य उसके लिए भाषायी मॉडल होते हैं। बालक उनकी ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों और व्यवहार

Published: 15 July 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i7.45835
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

का अनुकरण करता है। इस प्रकार परिवार भाषा सीखने का प्रथम एवं सबसे प्रभावी संस्थान बन जाता है (Bruner, 1983)।

भारतीय समाज में परिवार केवल भाषा सीखने का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक परंपराओं, लोककथाओं, नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक व्यवहार का भी वाहक है। बच्चों को कहानी सुनाना, लोकगीत गाना, त्योहारों एवं पारिवारिक आयोजनों में संवाद करना—ये सभी गतिविधियाँ भाषा अधिग्रहण को समृद्ध करती हैं। इस कारण परिवार और भाषा विकास का संबंध केवल भाषाविज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा के क्षेत्र से भी गहराई से जुड़ा हुआ है।

विगत दो दशकों में वैश्वीकरण, शहरीकरण, डिजिटल मीडिया तथा एकल परिवारों की बढ़ती संख्या ने पारिवारिक भाषा-परिवेश में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। अनेक शोधों से संकेत मिलता है कि यदि परिवार में प्रत्यक्ष संवाद की जगह स्क्रीन-आधारित गतिविधियाँ अधिक हो जाएँ, तो बच्चों की शब्दावली, अभिव्यक्ति और संवाद कौशल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। दूसरी ओर, जिन परिवारों में नियमित बातचीत, साझा पठन (Shared Reading) और भावनात्मक संवाद की परंपरा होती है, वहाँ बच्चों का भाषा विकास अधिक समृद्ध पाया गया है (Kapengut & Noble, 2020)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने प्रारम्भिक शिक्षा में मातृभाषा/स्थानीय भाषा के उपयोग पर विशेष बल दिया है। नीति के अनुसार, बालक अपनी प्रथम भाषा के माध्यम से संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास अधिक प्रभावी ढंग से करता है। अतः परिवार और विद्यालय के मध्य भाषायी समन्वय भाषा अधिग्रहण की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाता है (Government of India, 2020)।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध-पत्र परिवार की भूमिका का बहुआयामी विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें भाषा अधिग्रहण के मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय तथा शैक्षिक पक्षों को समाहित किया गया है।

समस्या का प्रतिपादनः

वर्तमान समय में सामाजिक एवं तकनीकी परिवर्तनों के कारण परिवारों की संरचना और जीवन-शैली में व्यापक बदलाव आया है। संयुक्त परिवारों का स्थान एकल परिवारों ने ले लिया है तथा बच्चों के जीवन में डिजिटल उपकरणों की भूमिका बढ़ गई है। इसके परिणामस्वरूप पारिवारिक संवाद की मात्रा और गुणवत्ता में परिवर्तन देखा जा रहा है। यह परिवर्तन बच्चों के भाषा अधिग्रहण को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है, यह शिक्षा एवं बाल-विकास के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण शोध-विषय है। यद्यपि भाषा अधिग्रहण पर अनेक सिद्धांत उपलब्ध हैं, तथापि भारतीय बहुभाषिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ में परिवार की भूमिका का समग्र विश्लेषण अपेक्षाकृत कम हुआ है। इसलिए इस अध्ययन की आवश्यकता अनुभव की जाती है।

उद्देश्यः प्रस्तुत संशोधन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—

1. भाषा अधिग्रहण की अवधारणा एवं उसकी प्रकृति का विश्लेषण करना।
2. भाषा अधिग्रहण के प्रमुख सिद्धांतों का समालोचनात्मक अध्ययन करना।
3. परिवार की भूमिका का भाषा अधिग्रहण की प्रक्रिया में विश्लेषण करना।
4. माता-पिता की शिक्षा, पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति का भाषा विकास पर प्रभाव स्पष्ट करना।

5. भारतीय संदर्भ में मातृभाषा, बहुभाषिकता एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में परिवार की भूमिका का अध्ययन करना।
6. भाषा अधिग्रहण को प्रभावी बनाने हेतु अभिभावकों, शिक्षकों एवं नीति-निर्माताओं के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

संशोधन प्रश्नः प्रस्तुत संशोधन निम्नलिखित शोध प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करता है—

1. भाषा अधिग्रहण की प्रक्रिया में परिवार की क्या भूमिका है?
2. माता-पिता की शिक्षा एवं भाषाई व्यवहार बच्चों के भाषा विकास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?
3. क्या पारिवारिक संवाद की गुणवत्ता भाषा अधिग्रहण को प्रभावित करती है?
4. बहुभाषिक परिवारों में भाषा अधिग्रहण की प्रक्रिया किस प्रकार विकसित होती है?
5. क्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 द्वारा मातृभाषा पर दिया गया बल भाषा अधिग्रहण की प्रक्रिया को सुदृढ़ करता है?

भाषा अधिग्रहण की सैधांतिक अवधारणाः भाषा अधिग्रहण (Language Acquisition) वह स्वाभाविक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बालक बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के अपने सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण से भाषा सीखता है। यह प्रक्रिया जन्म से प्रारम्भ होकर बाल्यावस्था के प्रारम्भिक वर्षों में अत्यंत तीव्र गति से विकसित होती है (Owens, 2020)।

भाषा अधिग्रहण और भाषा-अध्ययन (Language Learning) में मूलभूत अंतर है। भाषा अधिग्रहण एक अवचेतन, स्वाभाविक एवं सामाजिक प्रक्रिया है, जबकि भाषा-अध्ययन विद्यालय अथवा अन्य औपचारिक संस्थानों में नियमबद्ध एवं सचेतन रूप से किया जाता है (Krashen, 1982)।

उदाहरणार्थ, एक दो वर्षीय बालक अपने माता-पिता से बातचीत करते-करते सहज रूप से"माँ पानी दो"या"मैं बाहर जाऊँगा"जैसे वाक्य बोलना सीख जाता है, जबकि विद्यालय में वही बालक बाद में व्याकरण के नियम सीखता है। इस प्रकार भाषा अधिग्रहण अनुभव-आधारित, अंतःक्रियात्मक एवं संदर्भ-आधारित प्रक्रिया है।

भाषा अधिग्रहण के प्रमुख सिद्धांतः भाषा अधिग्रहण को समझाने के लिए अनेक सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं। प्रत्येक सिद्धांत परिवार की भूमिका को अलग दृष्टिकोण से स्पष्ट करता है।

अनुक्रम	सिद्धांत के प्रतिपादक	सिद्धांतकी महत्वपूर्ण निपज
१	बी. एफ. स्किनर (B. F. Skinner, 1957) Behaviourist Theory	• बालक अनुकरण (Imitation) करता है। • सही भाषा प्रयोग पर उसे प्रोत्साहन (Reinforcement) मिलता है। • बार-बार अभ्यास (Repetition) से भाषा स्थायी बन जाती है।

		परिवार की भूमिका: स्किनर के अनुसार परिवार भाषा अधिग्रहण का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है क्योंकि— • माता-पिता सही उच्चारण सिखाते हैं। • बच्चे के सही उत्तर की प्रशंसा करते हैं। • गलत भाषा प्रयोग को सुधारते हैं। • लगातार संवाद का अवसर देते हैं।
२	नोम चॉम्स्की (1965) Nativist Theory	चॉम्स्की ने भाषा अधिग्रहण को मानव की जन्मजात क्षमता माना।उन्होंने **Language Acquisition Device (LAD)** की अवधारणा प्रस्तुत की। उनके अनुसार— • प्रत्येक बालक भाषा सीखने की जैविक क्षमता लेकर जन्म लेता है। • मस्तिष्क में भाषा सीखने की एक प्राकृतिक संरचना होती है। • सीमित भाषाई अनुभव से भी बच्चा जटिल व्याकरण सीख सकता है। **परिवार की भूमिका** यद्यपि चॉम्स्की ने भाषा की जन्मजात क्षमता पर बल दिया, फिर भी उन्होंने स्वीकार किया कि परिवार आवश्यक भाषाई इनपुट (Language Input) उपलब्ध कराता है। यदि बालक को परिवार में पर्याप्त संवाद नहीं मिलेगा तो उसकी जन्मजात क्षमता का पूर्ण विकास नहीं हो सकेगा।
३	जीन पियाजे (Jean Piaget, 1952)	पियाजे के अनुसार भाषा का विकास संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) का परिणाम है। उदाहरण—

		जब बालक "गेंद" को पहचानना सीखता है, तभी वह "गेंद" शब्द का अर्थ समझ पाता है। **परिवार की भूमिका** • वस्तुओं से परिचित कराता है। • अनुभव प्रदान करता है। • प्रश्न पूछने का अवसर देता है। • समस्या समाधान की परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है।
४	लेव विगोत्स्की (1978) Sociocultural Theory	विगोत्स्की के अनुसार भाषा सामाजिक अंतःक्रिया का परिणाम है।उन्होंने **Zone of Proximal Development (ZPD)** की अवधारणा प्रस्तुत की।उनके अनुसार— • बालक अकेले जितना सीख सकता है, उससे अधिक वह किसी अनुभवी व्यक्ति की सहायता से सीखता है। • परिवार के सदस्य बच्चे के "More Knowledgeable Other (MKO)" होते हैं। • भाषा सामाजिक सहभागिता से विकसित होती है। **परिवार की भूमिका- परिवार—** • बच्चों के साथ संवाद करता है। • प्रश्न पूछता है। • कहानी सुनाता है। • शब्दों का अर्थ समझाता है। • सामाजिक व्यवहार सिखाता है।
५	जेरोम ब्रूनर (1983) Social Interaction Theory	ब्रूनर ने **Language Acquisition Support System (LASS)** की अवधारणा प्रस्तुत की।उन्होंने कहा कि—

		यदि चॉम्स्की का LAD भाषा सीखने की जैविक क्षमता है, तो परिवार LASS के रूप में उस क्षमता को विकसित करने वाला सामाजिक तंत्र है। **परिवार की भूमिका-ब्रूनर के अनुसार—** • माता-पिता बच्चों से सरल भाषा में बात करते हैं। • बार-बार शब्द दोहराते हैं। • चित्र दिखाकर वस्तुओं के नाम बताते हैं। • कहानी एवं खेलों के माध्यम से भाषा सिखाते हैं। • बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

भारतीय संदर्भमे प्रस्तुत संशोधनकी समीक्षाः

National Education Policy (2020) राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने प्रारम्भिक शिक्षा में मातृभाषा को सर्वोत्तम माध्यम माना। इस नीतिमें **मुख्य बिंदु**

- कक्षा 5 तक मातृभाषा/स्थानीय भाषा में शिक्षा।
- परिवार एवं विद्यालय के मध्य भाषायी समन्वय।
- बहुभाषिक शिक्षा को प्रोत्साहन।

NCERT (2005)

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF-2005) में भाषा को सामाजिक अंतःक्रिया का माध्यम माना गया। इसमें परिवार एवं समुदाय को भाषा विकास का महत्वपूर्ण आधार स्वीकार किया गया।

विश्लेषण एवं चर्चाः साहित्य समीक्षा, भाषा-अधिग्रहण के प्रमुख सिद्धांतों तथा समकालीन शोधों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भाषा अधिग्रहण एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें जैविक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भावनात्मक कारक परस्पर जुड़े हुए हैं। इन सभी कारकों में परिवार सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था के रूप में उभरकर सामने आता है। स्किनर (1957) ने भाषा विकास को अनुकरण एवं पुनर्बलन से जोड़ा, जबकि चॉम्स्की (1965) ने जन्मजात भाषाई क्षमता (LAD) पर बल दिया। पियाजे (1952) ने इसे संज्ञानात्मक विकास का परिणाम माना, वहीं विगोत्स्की (1978) एवं ब्रूनर (1983) ने सामाजिक अंतःक्रिया एवं परिवार को भाषा अधिग्रहण का प्रमुख आधार बताया। आधुनिक अनुसंधानों ने इन सिद्धांतों का समन्वित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, जिसके अनुसार भाषा विकास जन्मजात क्षमता और समृद्ध पारिवारिक वातावरण—दोनों के संयुक्त प्रभाव से होता है (Bornstein et al., 2020)। परिवार का प्रभाव केवल शब्दावली तक सीमित नहीं है, बल्कि भाषा के प्रयोग, व्याकरण, अभिव्यक्ति, सामाजिक व्यवहार तथा सांस्कृतिक पहचान तक विस्तृत है। परिवार में होने वाली नियमित बातचीत, कहानी-कथन,

साझा पठन, लोकगीत, दैनिक संवाद तथा सकारात्मक भावनात्मक वातावरण बच्चों के भाषायी विकास को गति प्रदान करते हैं।

शैक्षिक निहितार्थः इस संशोधन के आधार पर निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ सामने आते हैं—

अभिभावको के लिए-

- प्रतिदिन कम से कम 20–30 मिनट बच्चों से सार्थक बातचीत करें।
- बच्चों को कहानी सुनाएँ एवं उनसे कहानी दोहराने के लिए कहें।
- घर में पुस्तक-पठन की संस्कृति विकसित करें।
- बच्चों के प्रश्नों का धैर्यपूर्वक उत्तर दें।
- मातृभाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित करें।
- मोबाइल या टीवी के स्थान पर प्रत्यक्ष संवाद को प्राथमिकता दें।

शिक्षको के लिए-

- विद्यालय एवं परिवार के मध्य भाषायी सहयोग स्थापित करें।
- अभिभावकों को भाषा-विकास संबंधी प्रशिक्षण प्रदान करें।
- कक्षा में मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा का सम्मानजनक उपयोग करें।
- बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करें।
- परियोजना आधारित एवं संवादात्मक शिक्षण अपनाएँ।

नीति-निर्माताओं के लिए-

- प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में परिवार की सहभागिता बढ़ाने हेतु विशेष कार्यक्रम बनाए जाएँ।
- मातृभाषा आधारित शिक्षण सामग्री विकसित की जाए।
- डिजिटल संसाधनों एवं पारिवारिक संवाद के संतुलित उपयोग पर जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।

निष्कर्षः

भाषा अधिग्रहण मानव विकास की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं में से एक है और इसका सबसे प्रभावशाली आधार परिवार है। प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भाषा विकास केवल जैविक क्षमता का परिणाम नहीं, बल्कि परिवार द्वारा निर्मित सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भावनात्मक वातावरण का भी प्रतिफल है। माता-पिता का संवाद, मातृभाषा का प्रयोग, साझा पठन, कहानी-कथन, दादा-दादी का सांस्कृतिक योगदान तथा परिवार की सकारात्मक सहभागिता बालक की भाषायी दक्षता को समृद्ध बनाते हैं। भाषा अधिग्रहण के व्यवहारवादी, जन्मजात, संज्ञानात्मक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांतों का समेकित विश्लेषण यह दर्शाता है कि भाषा विकास के लिए जन्मजात क्षमता आवश्यक है, किंतु उसका पूर्ण विकास परिवार द्वारा प्रदान किए गए समृद्ध भाषायी वातावरण पर निर्भर करता है। विशेष रूप से विगोत्स्की एवं ब्रूनर के सिद्धांत यह प्रमाणित करते हैं कि परिवार भाषा विकास का सक्रिय

सहायक तंत्र (Support System) है। भारतीय संदर्भ में मातृभाषा, बहुभाषिकता तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रावधान परिवार की भूमिका को और अधिक महत्वपूर्ण बनाते हैं। वर्तमान समय में डिजिटल तकनीक के बढ़ते प्रभाव के बीच परिवार को बच्चों के साथ प्रत्यक्ष संवाद, कहानी-कथन तथा साझा पठन जैसी गतिविधियों को प्राथमिकता देनी चाहिए। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि परिवार भाषा अधिग्रहण की आधारशिला है। यदि परिवार संवादात्मक, भावनात्मक रूप से सहयोगी एवं भाषायी रूप से समृद्ध वातावरण प्रदान करे, तो बालक का भाषा विकास अधिक प्रभावी, रचनात्मक तथा स्थायी होगा। भविष्य में भारतीय बहुभाषिक समाज, डिजिटल परिवेश तथा परिवार की बदलती संरचना के संदर्भ में अधिक अनुभवजन्य शोधों की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. अमेरिकन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स। (2016). *मीडिया और छोटे बच्चों का मस्तिष्क। पीडियाट्रिक्स*, 138(5), e20162591।
2. अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन। (2020). *अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन का प्रकाशन मैनुअल* (7वाँ संस्करण)। एपीए।
3. बायलिस्टोक, ई. (2017). *द्विभाषिक अनुकूलन। साइकोलॉजिकल बुलेटिन*, 143(3), 233–262।
4. बॉर्नस्टीन, एम. एच., पुटनिक, डी. एल., एवं एस्पोसिटो, जी. (2020). *विकास के दौरान कौशल एवं अनुभव का पारस्परिक लेन-देन। डेवलपमेंटल साइकोलॉजी*, 56(10), 1842–1854।
5. ब्रूनर, जे. एस. (1983). *बच्चों की भाषा: भाषा का उपयोग सीखना*। डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन।
6. चॉम्स्की, एन. (1965). *वाक्य-विन्यास के सिद्धांत के पहलू*। एमआईटी प्रेस।
7. कमिंस, जे. (2000). *भाषा, शक्ति और शिक्षाशास्त्र*। मल्टीलिंगुअल मैटर्स।
8. भारत सरकार। (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*। शिक्षा मंत्रालय।
9. हार्ट, बी., एवं रिस्ली, टी. आर. (1995). *अमेरिकी बच्चों के दैनिक जीवन के अनुभवों में सार्थक अंतर*। पॉल एच. ब्रूक्स।
10. हॉफ, ई. (2006). *सामाजिक संदर्भ भाषा विकास को कैसे समर्थन देते हैं। डेवलपमेंटल रिव्यू*, 26(1), 55–88।
11. कापेंगुट, डी., एवं नोबल, के. जी. (2020). *माता-पिता की भाषा तथा छोटे बच्चों के लिए निर्देशित अधिगम। द फ्यूचर ऑफ चिल्ड्रेन*, 30(2), 71–92।
12. क्रैशेन, एस. डी. (1982). *द्वितीय भाषा अर्जन के सिद्धांत और व्यवहार*। पर्गामन प्रेस।
13. एनसीईआरटी। (2005). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005*। एनसीईआरटी।
14. ओवेन्स, आर. ई. (2020). *भाषा विकास: एक परिचय* (10वाँ संस्करण)। पियर्सन।
15. पियाजे, जे. (1952). *बच्चों में बुद्धि की उत्पत्ति*। इंटरनेशनल यूनिवर्सिटीज प्रेस।

16. रोवे, एम. एल. (2012). *बच्चों के लिए निर्देशित भाषा पर एक अनुदैर्ध्य अध्ययन*। *चाइल्ड डेवलपमेंट*, 83(5), 1762–1774।

17. स्किनर, बी. एफ. (1957). *मौखिक व्यवहार*। एप्पलटन-सेंचुरी-क्रॉफ्ट्स।

18. यूनेस्को। (2003). *बहुभाषी विश्व में शिक्षा*। यूनेस्को।

19. वाइगोत्स्की, एल. एस. (1978). *समाज में मन*। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

20. स्नो, सी. ई. (1977). *माता की वाणी पर शोध*। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

21. हॉफ-गिन्सबर्ग, ई. (1991). *विभिन्न सामाजिक वर्गों में माता–बच्चे के बीच वार्तालाप*। *चाइल्ड डेवलपमेंट*।

22. डिकिन्सन, डी. के., एवं टैबर्स, पी. ओ. (2001). *भाषा के माध्यम से प्रारंभिक साक्षरता*। पॉल एच. ब्रूक्स।

23. व्हाइटहर्स्ट, जी. जे., एवं लोनिगन, सी. जे. (1998). *बाल विकास और प्रारंभिक साक्षरता*। *चाइल्ड डेवलपमेंट*, 69(3), 848–872।

24. सेनेशल, एम., एवं लेफेव्रे, जे. (2002). *बच्चों के पठन कौशल के विकास में अभिभावकों की सहभागिता*। *चाइल्ड डेवलपमेंट*, 73(2), 445–460।

25. टोमासेलो, एम. (2003). *भाषा का निर्माण*। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।